कपिल शास्त्री

प्रतीकात्मक

ई-मेल-kshastri121@gmail.com

दशहरे की सुबह है। सत्य की असत्य पर और धर्म की अधर्म पर विजय के प्रतीक का पावन पर्व। पत्नी के जोर देने पर मेरे जैसा आलसी आदमी भी अनमनेपन से अपनी कार धोने के लिए कुछ शैंपू पाउच लेकर नीचे उतरा हूँ। कुएँ की मोटर चालू करके पाइप लगाकर अपनी कार धो रहा हूँ। पास ही गायकवाड़ की धूल-धूसरित कार भी खड़ी है जो पड़ोस के ही फ्लैट में रहता है लेकिन कई दिनों से अपनी पत्नी के पैर का ऑपरेशन कराने बड़े बेटे के पास पुणे गया हुआ है। वैसे भी इन लड़ाकू पति–पत्नी से अपार्टमेंट में कोई ज्यादा बात नहीं करता है। अपनी भी पानीपत की लड़ाइयों से ज्यादा बार लड़ाई हो चुकी है। उसकी कार धोने के लिए मुझे सिर्फ पाइप की दिशा मोड़नी है इसमें मेरा क्या जाएगा ! लेकिन इस मोड़ने में ही किंकर्तव्यमूढता की स्थिति पैदा हो गई है। धोऊँ कि नहीं धोऊँ ! बाकी सब तो अपनी कार साफ कर लेंगे बस यही कार गंदी रह जाएगी। यह सोचकर मुझमें गायकवाड़ के प्रति थोड़ी सहानुभूति जागृत हो गई है। दूसरा मन कह रहा है कि अब गंदी रह जाएगी तो रहने दो। मुझे क्या पड़ी है ! पत्नी भी क्रोधित होकर यही कहेगी कि 'तुम्हें क्या पड़ी थी जो उसकी भी कार साफ कर दी।' दूसरे फ्लैट के लोग भी क्या सोचेंगे कि 'शास्त्रीजी की रात की अभी तक नहीं उतरी है।' वैसे पिछले पच्चीस सालों से हम इस अपार्टमेंट में आसपास ही रह रहे हैं तो एक पड़ोसी का नाता भी है। अपने ही अपार्टमेंट का आदमी है। उसकी पत्नी सिर्फ हमसे ही कहकर गई है कि 'हमारे फ्लैट का ध्यान रखना। वापस आने में महीने दो महीने लग सकते हैं।' लेकिन कार का ध्यान रखने के बारे में तो कुछ नहीं कहा। ऑफिसर बनने के बाद साले की अकड़ बहुत बढ़ गई थी लेकिन रिटायरमेंट के बाद बहुत सुधर गया है। अभी तो पत्नी को लेकर बहुत परेशान है। रेलवे में सरकारी सेवा के दौरान कट्टर ईमानदार रहा है। कार भी सेकंड हैंड ली है लेकिन उसकी जान का टुकड़ा है। दिल ने कहा—'आज हमें अपने अंदर के रावण को मारना है। पड़ोसी की अनुपस्थिति में उसकी कार की सफाई भी इसका एक प्रतीक होगा।' एकाएक पाइप की दिशा उसकी कार की ओर मुड़ गई है। बचे हुए शैंपू पाउच उसकी कार में इस्तेमाल हो गए हैं। कपड़े से रगड़–रगड़ कर उसकी सफेद कार उजली कर दी है। फिर मार्केट जाकर दो गेंदे के हार लाया हूँ। एक अपनी और एक उसकी कार पर चढ़ाया है। मोबाइल से फोटो खींचकर पत्नी को भेज दी है जो उसकी पत्नी को फॉरवर्ड हो चुकी है। जवाब में कोटि–कोटि धन्यवाद आया है। रावण तो शाम को जलेगा लेकिन बुराई पर अच्छाई की जीत का दिन तो सुबह ही मन गया है। बड़ी संतुष्टि है कि अब आसपास खड़ी दोनों ही कारें चमचमा रहीं हैं।

फीलिंग्स

कपिल शास्त्री

रविप्रकाश और रत्ना अधेड़ पति पत्नी हैं लेकिन ट्रेन यात्रा में उनके साथ ग्यारहवीं, बारहवीं क्लास के स्टूडेंट्स का एक ग्रुप पूरे कोच में भरा हुआ है। वे किसी एजुकेशनल टूर पर जा रहे हैं और हर्षोल्लास से भरपूर हैं। कभी कोई उस कूपे से इस कूपे में आ रहा है तो कभी इधर से अगले कूपे में जा रहा है। लड़कियाँ कुछ ज्यादा ही प्रफुल्लित लग रही हैं। उनके साथ उनका एक अट्ठाइस–तीस साल का शिक्षक भी है जिसकी उनकी धींगामस्ती को अनुशासित करने में कोई रुचि नहीं दिख रही है; बल्कि वह एक चार्ट बनाने बैठ गया है और छात्र–छात्राओं को उसके हिसाब से कुछ निर्देशित कर रहा है। स्टूडेंट्स में शिक्षक की उपस्थिति का कोई भय नहीं है; बल्कि बड़े दोस्ताना ताल्लुकात लग रहे हैं। आमने–सामने की लोअर बर्थ पर बैठने की जगह नहीं मिली तो एक खूबसूरत-सी लड़की बैठे हुए लड़के की जांघ पर ही बैठ गई है और अपने सामने वाले लड़के-लड़कियों से बात कर रही है। शिक्षक को भी इसमें कोई आपत्ति नहीं है। इधर लड़के को भी कोई फर्क नहीं पड़ा है। वह अपने मोबाइल में ही मगन है। यह दृश्य देखकर अधेड़ रविप्रकाश जी ने आँखें फाड़कर पत्नी की तरफ देखा है। रत्ना उनका मूक प्रश्न समझकर बोली, “अब कोई फीलिंग्स नहीं रह गई हैं।“

दुर्घटना

पच्चीस साल से कार चला रहा हूँ। कितना भी शोर–शराबा हो, ध्यान सड़क पर ही रहता है। एक्सीलेटर, क्लच, ब्रेक, स्टीयरिंग में एक सामंजस्य बना रहता है। आसपास से गुजरते हुए लोगों की रैश ड्राइविंग देखकर श्रीमतीजी तो क्रोधित हो जाती हैं लेकिन मैं धैर्य से काम लेता हूँ। कार के अंदर श्रीमतीजी और बेटी में किसी वृद्ध को लेकर बात चल रही थी जिसने पहली पत्नी के गुजरने के बाद अधेड़ अवस्था में दूसरी शादी कर ली थी। उस महिला ने उनकी बहुत सेवा की थी व मानसिक संबल प्रदान किया था, परंतु पहली पत्नी की संतानों ने उन्हें कभी माँ के रूप में स्वीकार नहीं किया। उन्होंने भी बेटे-बेटियों के सहारे न रहकर आश्रम की शरण ले ली थी। नजर सड़क पर चौकन्नी थी परंतु कान अपना काम कर रहे थे। वृद्ध की बात के बाद यही बात अब मेरे पर आ चुकी थी। माँ-बेटी में इसी मुद्दे पर विमर्श चल रहा था। पत्नी ने बेटी से कहा कि—"अगर पापा अकेले रह जाएँ तो उनकी भी शादी करा देना।"

बेटी को यह सख्त नागवार था। उसका कहना था कि—"अकेले भी रहा जा सकता है। शादी करना कोई जरूरी नहीं है। और आपने यह कैसे सोच लिया कि आप ही पहले जाओगी! अगर पापा चले गए तो क्या आप दूसरी शादी कर लोगी?”

“औरत अकेले रह सकती है; लेकिन आदमी अकेले नहीं रह सकता।” श्रीमतीजी का जवाब था। भविष्य में होने वाली ऐसी किसी संभावना का चलचित्र मेरे दिमाग में नहीं बन पा रहा था। उसके बाद ट्रैफिक सिग्नल के रेड होते ही आगे की कार के पिछले हिस्से में धड़ाम।